



सत्यमेव जयते

17/19

सत्यमेव जयते

पञ्चाङ्ग

पाप आपने गरः

शिवर योद्धा मे प्रसन्न हुने।

उभय - पक्षकारण उपानेष्ट । पक्षकारण

गरा विवाहित आराजिपान रा

संरक्षण के आधार पर निर्माण

विधा जा रुका है नग प्रग

उत्तर वाद को नती पलाना पहले

है वाद रुतानि विषा जाग १

पगावली फेसल सुधार वेरा जेक

सेन वद से १९५५

सहायक कलक्टर
डी.डी.वाजा

महाकरीषलाड

मोहनराम

श्रीक ५५१०

Signature